व्याख्यान - 07 स्नातक तृतीय खण्ड हिंदी प्रतिष्ठा   सप्तम पत्र - भारतीय काव्यशास्त्र

प्रो० हरे कृष्ण कुमार हरि, एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग, जैन एच. डी. जैन कॉलेज, आरा   120006

लक्षणा शब्द शक्ति की परिभाषा एवं उसके भेद

15 Mon

परिभाषा :

मुख्यार्थ के बाधित होने पर रूढ़ि अथवा प्रयोजन के कारण जिस शक्ति द्वारा मुख्यार्थ से सम्बन्धित कोई दूसरा अर्थ लक्षित होता है, उसे लक्षणा शब्द शक्ति कहा जाता है। जैसा कि आचार्य मम्मट ने 'काव्य प्रकाश' में लिखा है -

मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽर्थ प्रयोजनात् ।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत्सा लक्षणारोपिता क्रिया ।

आचार्य विश्वनाथ का भी साहित्यदर्पण में कथन है :-

मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययान्योऽर्थः प्रतीयते
रूढ़े प्रयोजनाद्वासौ लक्षणाशक्तिरर्पिता ।

16 Tue

लक्षणा के लिए मुख्यार्थ से लक्ष्यार्थ का यथायोग्य सम्बन्ध एक आवश्यक शर्त है। 'रसगंगाधर' में पंडितराज जगन्नाथ और मुक्तावलीकार ने क्रमशः लिखा है -

'सम्बन्धो यथायोग्यं लक्षणा शरीराणि।'
'लक्षणाशक्य सम्बन्धस्य तात्पर्यानुपपत्तिः।'

इस प्रकार लक्षणा व्यापार की तीन स्थितियाँ हैं -

1. मुख्यार्थ की बाधा
2. मुख्यार्थ का अमुख्यार्थ (लक्षणा) से योग या सम्बन्ध
3. रूढ़ि अथवा प्रयोजन ।

लक्षणा शब्द शक्ति के भेद :

लक्षणा भेद निरूपण के क्रम में आचार्यों में मतवैभिन्न रहा है। आचार्य मम्मट ने 'काव्य प्रकाश' जहाँ लक्षणा के छह भेदों का उल्लेख किया है, वहाँ आचार्य विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण में लक्षणा के अस्सी भेदों का वर्णन किया है। रूढ़ि अथवा प्रयोजन की दृष्टि से लक्षणा के दो भेद होते हैं - रूढ़ लक्षणा और प्रयोजनवती लक्षणा। परन्तु आचार्य मम्मट के मतानुसार

June 2006

M	T	W	T	F	S	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

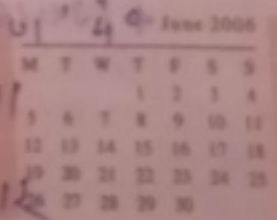

17 Wed

लक्षणा के छह भेद – गौणी, शुद्धा, उपादान, लक्षण, सारोपा साध्यवसाना हैं। आचार्य मम्मट, आचार्य विश्वनाथ एवं अन्य आचार्यों द्वारा निर्दिष्ट लक्षणा के भेदों पर दृष्टिपात करते हैं, तो सात जोड़े स्पष्टत: परिलक्षित होते हैं : –

1 रूढ़ा एवं प्रयोजनवती लक्षणा
2 गौणी एवं शुद्धा लक्षणा
3 उपादान एवं लक्षण लक्षणा
4. सारोपा एवं साध्यवसाना लक्षणा
5. गूढ़ एवं अगूढ़ व्यंग्या लक्षणा
6. धर्मिगत एवं धर्मगत लक्षणा और
7. पदगत एवं वाक्यगत लक्षणा।

18 Thu

1 रूढ़ा एवं प्रयोजनवती लक्षणा :

जहाँ मुख्यार्थ के बाधित होने पर मुख्यार्थ से सम्बन्धित दूसरा अर्थबोध किसी रूढ़ि या परम्परा के कारण होता है, तो उसे रूढ़ा लक्षणा की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। भिखारीदास ने 'काव्य-निर्णय' में लिखा है

मुख्य अर्थ के बाधतें शब्द लाच्छनिक होत।
रूढ़ि और प्रयोजनवती है लच्छना उदोत॥

+ ....

प्रयोजनवती लक्षणा : मुख्यार्थ के बाधित होने पर दूसरा अर्थ जब किसी विशेष अभिप्राय के लिए किया जाता है या लाक्षणिक शब्द का प्रयोग किया जाता है तो वह प्रयोजनवती लक्षणा होती है।

उदाहरण : लहरें व्योम चूमती उठतीं चपलाएं असंख्य नचतीं

गरज जलद की खड़ी झड़ी में बूँदें निज संसृति रचतीं।

लहरों का व्योम चूमना संभव नहीं है, इसका अर्थ है – स्पर्श करना। कवि इस शब्द का प्रयोग एक विशेष प्रयोजन – प्रलय की भयंकरता दिखाने के लिए किया है। तात्पर्य यह कि प्रलय की स्थिति में लहरें आकाश स्पर्श करतीं हैं।

उदाहरण : रूढ़ि लक्षणा –

उदित उदय गिरि मंच पर रघुवर बाल पतंग
बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग।

April 2006

M	T	W	T	F	S	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

2. गौणी लक्षणा एवं शुद्धा लक्षणा :

जहाँ सादृश्य सम्बन्ध अर्थात समान गुण या धर्म के कारण लक्ष्यार्थ की प्रतीति हो, वहाँ गौणी लक्षणा होती है। आचार्य विश्वनाथ ने 'साहित्य दर्पण' में लिखा है —

'सादृश्येतर सम्बन्धा : शुद्धास्ता सकला अपि।'

उदाहरण :

मुरलिका कर पंकज में लसी, जब अचानक बजती थी कभी।
तब अनूप पीयूष प्रवाह में, जन समागम था अवगाहता।।

यहाँ 'कर-पंकज' में गौणी लक्षणा है। सादृश्य सम्बन्ध के कारण लक्ष्यार्थ का बोध हो रहा है।

जहाँ सादृश्य सम्बन्ध के अतिरिक्त किसी अन्य सम्बन्ध अर्थात आधाराधेय, तात्कर्म्य, सामीप्य, कार्य कारण

अङ्गाङ्गि आदि सम्बन्धों के द्वारा लक्ष्यार्थ की प्रतीति हो, वहाँ शुद्धा लक्षणा होती है।

उदाहरण :

सामीप्य सम्बन्ध ;

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।

आँचल में दूध नहीं होता है। अतः यहाँ मुख्यार्थ की बाधा है। आँचल के सामीप्य के कारण स्तन में दूध होना अर्थ ग्रहण किया गया है। अतः यहाँ मातृत्व का बोध कराना लक्षणा का उद्देश्य है।

(3) उपादान लक्षणा और लक्षण लक्षणा :

जहाँ लक्ष्यार्थ अपने अर्थ की सिद्धि के लिए मुख्यार्थ भी ग्रहण किए रहता है, वहाँ उपादान लक्षणा होती है। जैसा कि आचार्य विश्वनाथ ने साहित्य दर्पण में लिखा है — मुख्यार्थस्येतराक्षेपो वाक्यार्थेऽन्वयसिद्धये। स्यादात्मनोऽप्युपादानादेषोपादान लक्षणा।

उदाहरण — खेलत ब्रज होरी सजे, बाजे बजे रसाल
पिचकारी चलति हाथी, जहँ-तहँ उड़त गुलाल

M	T				S	S
					10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

21 Sun

उपर्युक्त उदाहरण में पिचकारी के चलने का वर्णन है परन्तु पिचकारी अचेतन होने के कारण चल नहीं सकती। अतः मुख्यार्थ में बाधा होती है। अतः इससे सम्बन्धित अन्य अर्थ किया गया – 'पिचकारी चलाने वाला' परन्तु यहाँ उपादान द्वारा अर्थ ग्रहण करने पर भी पिचकारी को छोड़ा नहीं गया है। अतः यहाँ उपादान लक्षणा है।

जहाँ लक्ष्यार्थ अपने अर्थ की प्रतीति में मुख्यार्थ का सर्वथा परित्याग कर देता है, वहाँ लक्षण लक्षणा होती है। जैसा कि 'साहित्यदर्पण' आचार्य विश्वनाथ का कथन है :- 'अर्पणं स्वस्य वाक्यार्थे परस्यान्वय सिद्धये

उपलक्षण हेतुत्वादेषा लक्षण-लक्षणा।'

उदाहरण :

कर समेटि कच भुज उलटि, खएँ सीस पट टारि

काको मन बाँधै न यह जूरा बाँधनि हारि

22 Mon

यहाँ 'मन बाँधै' मन को बाँधना में लक्षण-लक्षणा है परन्तु मन ऐसी वस्तु नहीं, जिसे बाँधा जा सके। अतः मुख्यार्थ के बाधित होने पर अन्य अर्थ ग्रहण किया गया है – मन को आसक्त करना। अर्थात् जूड़ा बाँधने वाली नायिका किसके मन को आसक्त नहीं करती है। यहाँ मुख्यार्थ पूर्णतः बाधित है।

4. सारोपा और साध्यवसाना लक्षणा :

जहाँ गुणों के अत्यंत सादृश्य के कारण आरोप्यमान (उपमान) तथा आरोप्य विषय (उपमेय) को एक रूप में व्यक्त किया जाय, वहाँ सारोपा लक्षणा होती है – (एक वस्तु में दूसरी वस्तु की अभेद प्रतीति कराने को आरोप कहते हैं) जैसा कि 'काव्य प्रकाश' में आचार्य मम्मट ने प्रस्तुत किया है –

'सारोपाऽन्यात्, यत्रोक्तौ विषयी विषयस्तथा विषयन्तः कृतेऽस्मिन् सा स्यात्साध्यवसानिका।' उदाहरण – मोहन जो दृग पुतरी जौं छबि निहारि आप [illegible]

पुत्या निमैन मुद्रानी, सीच बाँसुरी तान

उदाहरण : इस उदाहरण में दृग या पुतली को छबि पर [illegible] का [illegible] पर [illegible] का [illegible] आरोप किया गया है। मोहन छवि [illegible]

जहाँ उपमान (विषयी) से और उपमेय (विषय) का अभेद कथित हो, वहाँ साध्यवसाना लक्षणा होती है।

वर्षा के दो-दो बर बारिद
और शरद के दो दो चन्द्र !

| [illegible] आरोप के विषय [illegible] उपमान है [illegible] मुख्यार्थ [illegible]

उपर्युक्त उदाहरण में 'दो-दो बर बारिद' के द्वारा राम-भरत [illegible] तथा 'दो दो चन्द्र' के द्वारा लक्ष्मण और शत्रुघ्न की अभेद प्रतीति कराई गयी है क्योंकि बारिद का रंग श्याम होता है जो राम-भरत में है तथा चन्द्र का रंग उज्ज्वल होता है जो लक्ष्मण और शत्रुघ्न का है अतः यहाँ ~~सारोपा~~ साध्यवसाना लक्षणा है। यहाँ उपमान के द्वारा उपमेय का बोध

23 Tue

कराया गया है।

5. गूढ़ व्यंग्या और अगूढ़ व्यंग्या लक्षणा :

किसी शब्द से यदि लक्ष्यार्थ के साथ व्यंग्यार्थ का भी बोध हो तथा व्यंग्यार्थ का बोध या ज्ञान केवल सहृदय को ही होता है, तो वहाँ गूढ़ व्यंग्या लक्षणा होती है।

उदाहरण :

चाले की बातें चलीं सुनति सखिन के टोल।
गोये हूँ लोचन हँसत बिहँसत जात कपोल॥

उपर्युक्त उदाहरण में सखियों के मध्य बैठी नायिका के गौने की बात चलने पर नायिका आँख छिपाने पर भी हँसने लगी और कपोल भी मुस्कुरा उठे। यहाँ आँखों के हँसने और कपोलों के मुस्कुराने में मुख्यार्थ की बाधा है। मनुष्य हँसता है, कपोल या आँख नहीं। अत: बिहँसने का

24 Wed

लक्ष्यार्थ उल्लसित होना ग्रहण किया गया है। जो सर्वजन सुलभ न होकर सहृदय से सम्बन्ध है।

किसी शब्द से यदि लक्ष्यार्थ के साथ व्यंग्यार्थ का भी बोध होता है तथा वह व्यंग्यार्थ सर्वजन सुलभ होता है, तो उसे अगूढ़ व्यंग्या लक्षणा कहते हैं।

उदाहरण :

पल न चलैं जकि सी रही थकि सी रही उसास
अब ही तन रितयौ, कहो मनु पठयो किहि पास।

इस दोहे में सखी नायिका से कह रही है कि तुम्हारी पलकें स्तम्भित हैं। तुम भी स्तम्भित हो रही हो, तुम्हारी साँस थकी हुई सी प्रतीत हो रही है। अभी तुमने अपने शरीर को बेचैन कर दिया है, पता नहीं मन किसके पास है – मैं अगूढ़ व्यंग्या लक्षणा है। मन और शरीर कोई ऐसी वस्तु नहीं जो किसी के पास भेज दिया जाय। यहाँ नायिका पूर्वानुराग वर्णित है, जो अगूढ़ व्यंग्या लक्षणा है।

6. धर्मगत और धर्मिगत लक्षणा :

जहाँ लक्षणा का व्यंग्य रूप प्रयोजन लक्ष्यार्थ के धर्म रहता है, वहाँ धर्मगत लक्षणा होती है।

यथा – 'गंगा में घर है' – कहने से शीतलता, पवित्रता आदि जो गंगा तट का धर्म है, वही व्यंग्य रूप प्रयोजन है। अत: यह धर्मगत लक्षणा है।

June 2006

T	W	T	F	S	S
		1	2	3	4
6	7	8	9	10	11
13	14	15	16	17	18
20	21	22	23	24	25
27	28	29	30		

25 Thu

जहाँ लक्षणा का व्यंग्य रूप प्रयोजन लक्ष्यार्थ में रहता है, वहाँ धर्मिगत लक्षणा होता है। यथा - गाँधी टोपी - कहने से गाँधी टोपी धारण करने वाले का बोध होता है, जो धर्मी है।

7. पदगत और वाक्यगत लक्षणा :

जहाँ एक पद लाक्षणिक हो, उसे पदगत लक्षणा कहा जाता है। यथा - गंगा में घर है - वाक्य में केवल एक पद 'गंगा' ही लाक्षणिक है।

जहाँ सम्पूर्ण वाक्य लाक्षणिक होता है, उसे वाक्यगत लक्षणा कहते हैं। यथा - धन्य हैं, आपका उपकार कभी न भूलूँगा। - यहाँ सम्पूर्ण वाक्य में लक्षणा है।

26 Fri

April 2006

M	T	W	T	F	S	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30